सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

जीवन को नई दिशा प्रदान करने वाले विचार

०

लेखक

खलील जिब्रान

अनुवादक

सत्यकाम

०

१९८१

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
एन ७७, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली

•

तीसरी बार : १९८१
मूल्य : ३.००

•

मुद्रक
कंवल किशोर द्वारा
लखेरवाल प्रेस, नई दिल्ली-५ में मुद्रित

प्रकाशकीय

विश्व के विख्यात लेखक, कवि, चित्रकार और दार्शनिक खलील जिब्रान के नाम से हिन्दी के पाठक भली-भांति परिचित हैं। उनकी प्रायः सभी पुस्तकों के हिन्दी रूपान्तर निकल चुके हैं, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं।

'मंडल' से जिब्रान की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उनमें से अधिकांश के कई-कई संस्करण हो चुके हैं।

अपनी पुस्तकों में जिब्रान ने अपनी गहरी अनुभूतियां दी हैं। ये अनुभूतियां व्यक्तिगत होते हुए भी सबके हृदय का स्पर्श करती हैं और पाठक अनुभव करता है कि लेखक उन्हीं के दिल की बात कह रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक में जिब्रान ने अत्यन्त प्र रणादायक विचार दिये हैं। ये विचार क्या हैं, सुभाषित हैं, जिन्हें बार-बार पढ़ने को मन करता है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस पुस्तक को ही नहीं, लेखक की सभी पुस्तकों को चाव से पढ़ेंगे और अपने बन्धु-बांधवों तथा मित्रों को भी पढ़वायंगे।

—मंत्री

लेखक-परिचय

सन् १८८३ ई० में सीरिया के माउण्ट लेबनान प्रांत के एक सम्पन्न तथा प्रतिष्ठित घराने में खलील जिब्रान का जन्म हुआ था। वह बारह वर्ष की अवस्था में अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रांस और अमरीका की सैर करने गये और दो वर्ष बाद लौटकर आये, तभी उन्हें बेरुत के अल-हिकमत मदरसे में दाखिल कराया गया, जहां उन्होंने अरबी साहित्य का गहरा अध्ययन किया। तभी वह अरबी में कविताएं भी लिखने लगे और थोड़े ही समय में उनकी गणना अरबी के महान् साहित्यकारों में होने लगी। सन् १९०३ ई० में वह पुनः अमरीका गये, जहां उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन शुरू किया। पांच वर्ष बाद वह फ्रांस चले आये, जहां उन्होंने चित्रकला का अभ्यास किया। सन् १९१२ ई० में वह फिर अमरीका गये और जीवन के अन्त तक न्यूयार्क में ही रहे।

अमरीका में रहकर करीब १९१८ ई० से उन्होंने अंग्रेजी में लिखना शुरू किया और तब से उनकी ख्याति सिर्फ अंग्रेजी भाषा-भाषी जनता में ही नहीं, बल्कि अनुवाद द्वारा सारे संसार में फैल गई और अब तक करीब पच्चीस भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं।

उनकी प्रायः सभी पुस्तकें स्वयं उनके बनाये हुए चित्रों से विभूषित हैं। उनकी चित्रकला उनकी अपनी चीज है जो गूढ़ होते हुए भी सजीव और भावपूर्ण है। इन चित्रों का प्रदर्शन पश्चिमी जगत के सारे देशों की राजधानियों में हो चुका है। इनकी तुलना यूरोप के महान् चित्रकार रोडिन और विलियम ब्लैक से की जाती है।

उनकी अंग्रेजी पुस्तकों के नाम और प्रकाशन के वर्ष इस प्रकार हैं :

दि मैडमैन	१९१८	जीसस, दि सन ऑफ मैन	१९२८
दि फोर रनर	१९२०	दि अर्थ गाड्स	१९३१
दि प्राफेट	१९२३	दि वांडरर	१९३२
सैंड एण्ड फोम	१९२६	दि गार्डन ऑव दि प्राफेट	१९३३

वैसे तो उपरोक्त सभी पुस्तकों का पूर्व और पश्चिम की कितनी ही भाषाओं में अनुवाद हो चुका है; लेकिन वास्तव में 'दि प्राफेट'[1] कवि की सर्वोत्कृष्ट रचना गिनी जाती है, जिसका संसार की पच्चीस से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

इस महान् कवि, दार्शनिक और चित्रकार का देहांत ४८ वर्ष की अवस्था में १० अप्रैल १९३१ ई० को हो गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि वह कुछ दिन और जीवित रहता तो उसकी और भी अनेक महान् रचनाओं से संसार लाभान्वित होता।

---

[1]इसका अनुवाद 'सस्ता साहित्य मंडल', नई दिल्ली से 'जीवन संदेश, के नाम से प्रकाशित हुआ है। मूल्य रु० ४.००.

मेरा गृह मुझसे कहता है, "मुझे मत छोड़ना, क्योंकि तुम्हारा अतीत यहीं व्यतीत हुआ है।"

और मार्ग कहता है, "जाओ, मेरा अनुसरण करो, क्योंकि मैं तुम्हारा भविष्य हूं।"

और मैं गृह तथा राजपथ दोनों से कहता हूं, "न कोई मेरा अतीत है, न कोई मेरा भविष्य। यदि मैं यहां रुक भी जाऊं, तो मेरे रुकने में भी गति है, और यदि मैं जाता हूं तो मेरे गमन में भी स्थिरता है। केवल स्नेह और मरण ही प्रत्येक प्रसंग को बदल सकते हैं।"

—खलील जिब्रान

हीरे और मोती

हीरे और मोती

मैं सागर के इन तटों पर फेन और सिकता के बीच सदा से घूम रहा हूं।

आनेवाला ज्वार मेरे पद-चिन्हों को मिटा देगा, और बहनेवाली वायु इस झाग को उड़ा ले जायगी।

किन्तु सागर और तट सदा विद्यमान रहेंगे।

o

एक बार मैंने मुट्ठी में रेत भरा।

जब मैंने इसे खोला तो आश्चर्य ! उस रेत के स्थान पर एक कृमि था।

और फिर मैंने अपने हाथ को बन्द किया और खोला, और आश्चर्य ! इस बार उस कृमि के स्थान पर पक्षी था।

और फिर मैंने एक बार हाथ बन्द किया और खोला, और अबकी बार देखा कि इसके गर्त में ऊपर को चेहरा किये उदास भावाकुल एक मनुष्य खड़ा था।

और जब फिर मैंने मुठ्टी बन्द की और खोली तो वहां फिर सिवा धूल के कुछ न था।

किन्तु अब मैं एक असीम माधुर्यभरा गीत सुन रहा था।

अभी कल तक ही मैं यह समझता था कि मेरी आत्मा जीवन की विशाल परिधि में स्पन्दनरहित एक छोटा-सा कांपता हुआ अंशमात्र है।

और अब मैंने जाना कि विशाल परिधि मैं ही हूं और इन स्पन्दनमय अंशों से युक्त यह समस्त जीवन मेरे ही अन्दर गतिशील है।

o

वे मुझे प्रबोधन करते हुए कहते हैं, "तुम और तुम्हारा निवास-स्थल यह विश्व, अनन्त सागर के अनन्त तट पर सिकता की एक कणिका मात्र है।"

o

और अपने स्वप्न में मैं उनसे कहता हूं, "मैं ही वह अनन्त सागर हूं और यह समस्त विश्व मेरे ही तट पर सिकता की कणिकाएं-मात्र हैं।

o

मैं सिर्फ एक ही बार निरुत्तर हुआ हूं। वह भी तब, जब एक मानव ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

o

भगवान का प्रथम विचार 'देव-दूत' बना और भगवान के प्रथम शब्द ने 'मानव' की आकृति पाई।

o

उससे लाखों वर्ष पूर्व जबकि सागर और वायु नें हमें वन में प्रथम शब्द प्रदान किये, हम गति-शील, भ्रमण-शील और इच्छा-शील प्राणियों के रूप में विद्यमान थे।

यह कैसे सम्भव है कि अपने आधुनिकतम शब्दों के द्वारा हम अपने उस पुरातन काल की गाथा कह सकें ?

o

समस्या से ग्रस्त पुरुष केवल एक ही वाक्य बोला। उसने कहा, "सिकता का एक कण ही मरुस्थल है और सम्पूर्ण मरुस्थल

सिकता का एक कण है, और अब हम सबको फिर से शान्त हो जाना चाहिए।"

मैंने उसकी बात सुनी, पर समझ न सका।

o

एक बार मैंने एक नारी की आकृति देखी और उसकी समस्त अजात सन्तानों को देख लिया।

और एक बार एक नारी ने मेरे चेहरे की ओर दृष्टि डाली और अपने जन्म से पूर्व मृत मेरे समस्त पूर्वजों को पहचान लिया।

o

अब मुझे परिपूर्ण हो जाना चाहिए।

किन्तु यह कैसे सम्भव है, जबतक मैं उस नक्षत्र के समान न बन जाऊं, जिसके पृष्ठ पर उद्बुद्ध जीवनों का निवास है ?

क्या प्रत्येक मानव का यही लक्षण नहीं है ?

o

सिकता कण के चारों ओर वेदना द्वारा चुना गया मंदिर ही तो हीरा है।

किस कण के चारों ओर, इच्छाओं ने हमारे शरीर का निर्माण, किस रूप में किया ?

o

जब प्रभु ने मुझे एक पाषाण-खण्ड की तरह संसार की इस अद्भुत झील में फेंका तो मैंने असंख्य वृत्ताकार लहरों के द्वारा इसकी शान्त सतह को विक्षुब्ध कर दिया।

किंतु ज्यों-ज्यों मैं गहराई में बैठता गया, मैं शांत होता गया।

तुम मुझे शांति प्रदान करो और मैं रात्रि को भी पराजित कर दूंगा।

o

मेरा वह द्वितीय जन्म था, जब कि मेरी आत्मा तथा मेरी देह ने परस्पर प्रेम प्रारम्भ किया और मिलकर एक हो गए।

o

मुझे स्मरण है उस मनुष्य का जिसके कान बहुत तीव्र थे, परन्तु वह मूक था। उसकी जिह्वा एक लड़ाई में कट गई थी।

o

मुझे अब पता चला कि उस मानव ने परम शांति प्राप्त करने से पूर्व कैसी-कैसी लड़ाइयां लड़ीं और मुझे प्रसन्नता है कि वह अब इस संसार में नहीं है।

हम दोनों के लिए यह संसार कितना छोटा है !

o

ऋतुओं से अस्पृष्ट और शांत, अनन्त समय से, मैं मिस्र के रेत में छिपा पड़ा था।

रवि ने मुझे जन्म दिया। मैं उठा और नील के तट पर घूमने लगा—दिवसों में गाता हुआ और रातों में स्वप्न लेता हुआ।

और अब वही रवि सहस्रों रश्मियों से मुझे दबाता है, ताकि मैं फिर से मिस्र की रेत में सो जाऊं।

और यह आश्चर्यजनक पहेली है। जिस रवि ने मेरा निर्माण किया, वह विनाश करने में असमर्थ है।

अबतक भी मैं विद्यमान् हूं और अपने चरणों पर भरोसा किये नील के किनारों पर घूम रहा हूं।

o

संस्मरण सम्मेलन का एक रूप है।

o

विस्मरण-शीलता स्वतंत्रता का अन्य रूप है।

हम समय का परिमाण असंख्य सूर्यों की गति से करते हैं, और वे अपनी जेबों की छोटी घड़ियों से उसे नापते हैं।

और अब बताओ कि हम दोनों किस प्रकार, कभी भी, एक ही समय और एक ही स्थल पर मिल सकते हैं?

o

जो पुरुष स्वर्गगंगा को राह नीचे देखता है, उसके लिए पृथ्वी और सूर्य की दूरी नदी के तुल्य है।

o

मानवता प्रकाश की वह नदी है, जो सीमित से असीम की ओर बहती है।

o

आकाश में विचरनेवाली आत्माएं क्या मानव से उसकी कसक के लिए ईर्ष्या नहीं करती?

o

पवित्र नगर की राह में, मैं एक यात्री से मिला, और उससे पूछा, "क्या पवित्र नगर (तीर्थ) का यही मार्ग है?"

उसने कहा, " तुम मेरा अनुगमन करो। एक दिन में ही तुम वहां पहुंच जाओगे।"

मैंने उसका अनुगमन किया। हम कई दिन और कई रात चलते रहे, फिर भी 'तीर्थ' तक नहीं पहुंच सके।

और आश्चर्यजनक बात तो यह कि वह मुझपर ही क्रोधित हुआ, क्योंकि स्वयं उसने मुझे अशुद्ध पथ पर डाला था।

o

हे भगवन्, मुझे शेर का शिकार बना देना, इससे पूर्व कि मैं गिलहरी का शिकार करूं।

o

रात्रि का मार्ग तय किये बिना उषा तक पहुंचना, किसी के लिए भी असम्भव है।

o

मेरा गृह मुझसे कहता है, "मुझे मत छोड़ना, क्योंकि तुम्हारा अतीत यहीं व्यतीत हुआ हैं।"

और मार्ग कहता हैं, "आओ मेरा अनुसरण करो, क्योंकि मैं तुम्हारा भविष्य हूं।"

और मैं गृह तथा राजपथ दोनों से कहता हूं, "न कोई मेरा अतीत हैं, न कोई मेरा भविष्य। यदि मैं यहां रुक भी जाऊं, तब मेरे रुकने में भी गति हैं, और यदि मैं जाता हूं तो मेरे गमन में भी स्थिरता है। केवल स्नेह और मरण ही प्रत्येक प्रसग को बदल सकते हैं।"

o

मैं जीवन के न्याय में अपनी श्रद्धा किस प्रकार कम कर सकता हूं, जबकि कुसुम-शैया पर सोने वालों के स्वप्न, धरती की शैया पर सोनेवालों के स्वप्नों से भिन्न नहीं होते ?

o

कितना अद्भुत है कि कुछ आनन्दों को प्राप्त करने की इच्छा भी मेरी पीड़ा का एक अंग है।

o

मैंने सात बार अपनी आत्मा से घृणा की :

प्रथम, जब मैंने उसे उच्चता-प्राप्ति की अभिलाषा में हतोत्साह पाया;

द्वितीय, जब मैंने उसे अपंग के सामने लंगड़ाते पाया;

तृतीय, जब उसे सरल या कठिन का चुनाव करना था और उसने सरल को चुना;

चतुर्थ, जब उसने एक पाप किया और यह सोचकर संतोष कर लिया कि अन्य भी यह पाप करते हैं;

पांचवीं बार, जबकि कमजोरी के प्रति उसने धैर्य दिखाया और अपनी इस धैर्यशीलता को शक्ति का प्रतीक बताया;

छठी बार, जबकि उसने एक चेहरे की विद्रूपता पर घृणा की दृष्टि डाली और यह न समझा कि यह उसी का एक रूप है;

और सातवीं बार तब, जबकि उसने प्रशंसा का एक गीत गाया और इसे अपना 'गुण' व्यक्त किया।

o

मैं परम सत्य से अनभिज्ञ हूं; किन्तु मैं अपने इस अज्ञान के प्रति नम्र हूं; और इसी में मेरा सम्मान और पुरस्कार है।

o

मानव की प्रत्येक कल्पना और उसकी प्राप्ति में सदा अंतर रहता है और इसको पूर्ण किया जा सकता है, केवल इच्छा से।

o

स्वर्ग, अगले कमरे में, उस द्वार की ओट में है; किन्तु मैं उसकी कुञ्जी खो चुका हूं।

सम्भवतः मैं इसे स्थानान्तरित कर बैठा हूं।

o

तुम नेत्र-विहीन हो, और मैं बधिर एवं मूक हूं। अतः आओ, हम एक-दूसरे को कर-स्पर्श से समझने का प्रयत्न करें।

o

मानव की महत्ता उसमें नहीं है, जो कुछ वह प्राप्त कर लेता है; अपितु उसमें है, जिसे वह प्राप्त करने की कामना रखता है।

o

हममें से कुछ स्याही के समान हैं और कुछ कागज के। और यदि यह हममें से कुछ के कृष्ण या धवल होने का ही भेद न होता, तो हममें से कुछ मूक होते और कुछ नेत्रविहीन।

o

तुम मुझे 'श्रोत्र' दो, मैं तुम्हें 'वाणी' दूंगा।

o

हमारा मस्तिष्क स्पंज है और हमारा हृदय जलधारा। यह विचित्र नहीं है कि हममें से अधिकांश चूसना पसंद करते हैं, बहना नहीं।

o

जबकि तुम उस आशीर्वाद की कामना करते हो, जिसे तुम नाम नहीं दे सकते और जब तुम बिना कारण जाने शोक प्रकट करते हो, वस्तुतः तभी तुम जगत की अन्य वर्धमान

वस्तुओं के साथ बढ़ते हो और अपनी महानतम आत्मा के प्रति ऊंचा उठते हो।

o

जब कोई व्यक्ति एक 'दृष्टि' के पूर्ण मद में होता है तब इसकी धुँधली अभिव्यक्ति को ही मदिरा मानता रहता है।

o

तुम मदिरा पीते हो, ताकि मदहोश हो सको, और मैं इसे पीता हूं ताकि मुझमें उस दूसरी मदिरा को पीने की कामना न रहे।

o

जब मेरा पात्र रिक्त होता है, तब मैं इसकी रिक्तता के उत्तर में अपने को ढीला छोड़ देता हूं; पर जब यह आधा भरा हो, तब मुझे इसके आधा होने पर असन्तोष हो उठता है।

o

दूसरे व्यक्ति की वास्तविकता उसमें नहीं है, जो कुछ वह तुम पर व्यक्त करता है; बल्कि उसमें है जो कुछ वह तुम पर व्यक्त नहीं कर पाता।

इसलिए यदि तुम उसे जानना चाहते हो तो उसकी उन बातों को न सुनो, जिन्हें वह सुनाता है, अपितु उन बातों को समझो, जिन्हें वह नहीं कहता।

o

जितना मैं बोलता हूं, उसका आधा निरर्थक है। परन्तु मेरे कहने का ढंग ऐसा है कि शेष आधा भाग तुम तक पहुंच सके।

हास्य की पहचान जीवन में सन्तुलन की पहचान है।

o

मेरी एकान्त-प्रियता का तब जन्म हुआ जब लोगों ने मेरी वाचाल त्रुटियों की प्रशंसा प्रारम्भ की तथा मूक गुणों की निन्दा प्रारम्भ की।

o

जब जीवन हृदय के गीतों को गानेवाला कोई गायक नहीं पाता, तब वह अपने मस्तिष्क से बातचीत करने वाला कोई दार्शनिक पैदा करता है।

सत्य को जानने का प्रयत्न सदा करना चाहिए। उसे बोलना कभी-कभी चाहिए।

o

हमारी वास्तविकता शान्त है, और कृत्रिमता वाचाल है।

o

मेरे जीवन का स्वर तुम्हारे जीवन के श्रवणों तक नहीं पहुंच सकता। परन्तु आओ, फिर भी हम वार्तालाप करें, ताकि हमें एकान्त की प्रतीति न हो।

o

जब दो स्त्रियां बातें करने लगती हैं, तब वे कुछ भी नहीं बोलतीं। परन्तु जब एक स्त्री बोलती है, वह जीवन के समस्त रहस्यों का उद्घाटन कर देती ह।

o

मेंढक, सम्भव है, बैलों की अपेक्षा अधिक शोर कर लें, किन्तु वे न तो खेतों में हल खींच सकते हैं, न ही कोल्हू के चक्र को हिला सकते हैं और न ही उनकी चमड़ी के जूते बन सकते हैं।

o

केवल मूक ही अधिक वाचाल से ईर्ष्या करता है।

o

यदि शरद् कहने लगे, "वसन्त मेरे हृदय में है," तो शरद् का कौन विश्वास करेगा ?

o

प्रत्येक बीज एक कामना है।

o

यदि तुम वास्तव में अपनी आंखें खोलकर देखो, तो तुम इन सब आकृतियों में अपनी ही आकृति पाओगे।

और यदि तुम वास्तव में अपने श्रवण खोलकर सुनो, तो विश्व की समस्त ध्वनि में अपनी ध्वनि को ही प्रतिध्वनित पाओगे।

o

सत्य के आविर्भाव में दो साथियों की सहायता होती है : एक उसे कहने वाला, दूसरा उसे समझने वाला।

o

यद्यपि शब्दों की यह लहर सदा हमारे बाह्य को ढका रखती है, किन्तु हमारा गम्भीर अन्तस् सदा मूक रहता है।

o

बहुत से सिद्धांत एक खिड़की के शीशे के समान हैं, जिसमें से हम सत्य को देख तो लेते हैं, पर जो हमें सत्य से पृथक भी कर देता है।

o

आओ, हम आंखमिचौनी खेलें। यदि तुम मेरे हृदय में छिप जाओगे, तब तुम्हें खोजना कठिन न होगा। किन्तु यदि तुम

अपने आवरण से भी पीछे छिप जाओगे, तब किसी भी अन्वेषक के लिए तुम्हें खोजना निरर्थक होगा।

o

नारी मुख को मुसकान के पर्दे से ढक सकती है!

o

वह दुःखी हृदय कितना भद्र होगा, जो आनन्दित हृदयों के आनन्दमय गीत को उनके साथ मिलकर गाता है!

o

मानव, जो एक नारी को समझ लेता है या प्रतिभा का छेदन कर सकता है, या मौन के रहस्य को ढूंढ़ लेता है, वह उस मनुष्य के समान है, जो एक अति सुन्दर स्वप्न से उठकर प्रातराश के लिए बैठ जाता है।

o

इन सभी प्रगतिशील प्राणियों के साथ मैं भी प्रगति करूंगा। इस जन-समूह को देखने के लिए मैं शान्त बनकर खड़ा न रहूंगा।

o

अपने सेवक के प्रति स्वर्ण की अपेक्षा कुछ अधिक के तुम ऋणी हो! या तो तुम उसे अपना हृदय दे दो, या उसकी सेवा करो।

o

नहीं, हमारा जीवन निरर्थक नहीं है।
क्या उन्होंने हमारी हड्डियों पर महल नहीं बनाये?

o

हमें व्यक्तिवादी और सीमित नहीं होना चाहिए। कवि

का मस्तिष्क और बिच्छू की पूंछ एक ही धरती से यशस्वी होकर उठती है।

o

प्रत्येक अजगर सेंट जार्ज को जन्म देता, जो बाद में उसका ही वध कर देता है।

o

वक्ष वे कविताएं हैं, जिन्हें धरती आसमान पर लिखती है! हम उन्हें गिरा देते हैं और उनका कागज के रूप में परिवर्तन कर देते हैं, ताकि अपनी रिक्तता को उस पर अंकित कर सकें।

o

यदि तुम लिखने का प्रयत्न करो, तो तुम्हें ज्ञान, कला और सम्मोहन की आवश्यकता होगी। ज्ञान, शब्दों के संगीत का, कला कलारहित होने का, और सम्मोहन अपने पाठकों के प्रति प्रेम का।

o

हमारे हृदयों में अपनी लेखनी भिगोकर वे सोचते हैं, उन्हें स्फुरण प्राप्त हो गया!

o

यदि एक वृक्ष अपना इति-वृत्त लिखने लगे, तो यह एक जाति के इतिहास से हीन न होगा!

o

यदि मुझे कविता लिखने की शक्ति या अलिखित कविता के आनन्द में से कोई एक चुनने के लिए कहा जाय तो मैं आनन्द को चुन लूंगा। वस्तुतः यह अधिक सुन्दर कविता है।

परन्तु तुम और मेरे समस्त पड़ोसी एकमत हो कि मैं सदा ही बुरी वस्तु पसन्द करता हूं।

o

केवल अभिव्यक्त अभिमत ही कविता नहीं है, प्रत्युत् वह एक गीत है जो सस्मित मुख से प्रवाहित होता है।

o

शब्द समय-बन्धन से रहित हैं। तुम्हें उनके समय-बन्धन रहित होने का ज्ञान रखकर ही उन्हें बोलना चाहिए या लिखना चाहिए।

o

कवि उस सिंहासन-च्युत अधिपति के समान है, जो अपने महलों की राख में बैठा उनमें से एक काल्पनिक महल बनाने का प्रयत्न करता है।

o

कविता प्रसाद, पीड़ा और आश्चर्य का समझौता है, जिसे लिखने के लिए शब्दकोश पर आश्रित रहना पड़ता है।

o

यदि कोई कवि हृदय के गीतों की जननी को खोजना चाहे, तो उसका यह प्रयत्न व्यर्थ रहेगा।

o

एक बार मैंने एक कवि से कहा, "तुम्हारी मृत्यु तक हम तुम्हारी योग्यता को न जान सकेंगे।"

और उसने उत्तर दिया, "निश्चय ही, मृत्यु सदा ही प्रकाशक रही है, और यदि तुम मेरी कोई भी योग्यता पहचान सके, तो यह इसलिए होगा कि वाणी की अपेक्षा मेरे हृदय का भाव-भण्डार अधिक है, और प्राप्ति की अपेक्षा मेरे अन्दर अभिलाषाओं का बाहुल्य है।

o

कविता वह मनीषा है, जो हृदय को आल्हादित कर देती हैं।

मनीषा वह कविता हैं, जो मानस में गीता हैं।

यदि हम मानव-हृदय को आल्हादित कर सकें और उसके ही साथ मन को संगीतमय कर सकें तभी वस्तुतः वह प्रभु की छाया में निवास करेगा।

o

स्फुरण सदा गायेगी, वह कभी वर्णन नहीं करेगी।

o

हम प्रायः अपने बच्चों को लोरियाँ इसलिए सुनाते हैं, ताकि हम स्वयं सो सकें।

o

हमारे समस्त शब्द मन की दावत में मेज से गिरे हुए कुछ टूकड़ों के समान हैं।

o

कविता के लिए 'विचार करना' सबसे भारी अवरोधक हैं।

o

महान गायक वह है, जो हमारे मौन भावों को गा सके।

o

यदि तुम्हारा मुख भोजन से पूर्ण हो, तो तुम किस तरह गा सकते हो ?

यदि तुम्हारे हाथों में सोना भरा हो, तो वे कब और किसे आशीर्वाद देने के लिए उठ सकते हैं ?

वे कहते हैं कि झींगुर जब प्रेम-गीत गाता हैं, तो वह अपना उर एक कांटे से चीर देता है।

वस्तुतः हम सब ही ऐसा करते हैं, अन्यथा हम गा ही कैसे सकते हैं ?

o

प्रतिभा, नव-वसन्त का प्रारम्भिक कोकिल- कल-कूजन ही तो हैं।

o

आत्मा,चाहे महात्वाकांक्षा से कितनी भी प्रेरित हो, शारीरिक आवश्यकता के बिना नहीं रह सकती।

o

उन्मत्त मनुष्य, तुम्हारी या मेरी अपेक्षा कम संगीतज्ञ नहीं ! केवल उसका वाद्य-यन्त्र स्वर में विकृत हो गया है।

o

माता के हृदय का मूक गीत नवजात शिशु के अधरों पर गान बनकर बाहर आता हैं।

o

कोई भी कामना अपूर्ण नहीं रहती।

o

मैं कभी भी अपनी अर्धेश्वरी से पूर्ण सहमत नहीं हो सका! सम्भवतः गूढ़ सत्य हम दोनों के मतभेद में छिपा हुआ हैं।

o

तुम्हारा सहचर सदा तुम्हारे लिए दुखी रहता हैं। पर वह सहचर दुःख में ही बढ़ता है ! इसलिए सबकुछ ठीक है।

o

आत्मा और देह का कोई पारस्परिक संघर्ष नहीं है। यह

संघर्ष केवल उनमें ही होता है, जिनकी आत्माएं निद्रित हों और जिनके शरीर जोर्ण तथा विकृत हो चुके हों।

o

जब तुम जीवन के मध्य में पहुंचोगे, तब तुम प्रत्येक वस्तु में सौन्दर्य पाओगे, यहां तक कि सौन्दर्य के प्रति अशक्त आंखों में भी।

वास्तविक जीवन सौन्दर्य की खोज में ही है। शेष सब कुछ तो प्रतीक्षा-मात्र है।

o

तुम बीज-वपन करो, भूमि तुम्हें प्रतिदान में पुष्प प्रदान करेगी।

तुम आकाशीय स्वप्नों को देखा करो और तुम अपने प्रिय को प्राप्त करोगे।

o

शैतान की सत्ता उसी दिन समाप्त हो गई थी, जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ था।

अब तुम्हें स्वर्ग तक जाने के लिए नरक में से राह नहीं लेनी होगी।

o

बहुत-सी नारियां पुरुष-हृदय को ऋण-रूप में 'ग्रहण कर लेती हैं, उसपर अधिकार किसी त्याग से ही सम्भव है।

o

और यदि तुमने उस पर अधिकार किया है, तो तुम उसके लिए 'निश्चय ही, दावा नहीं करोगे।

o

जब नर का हाथ नारी के हाथ से छू जाता हैं, तब वे दोनों अनन्त के हृदय को स्पर्श करते हैं।

o

प्रेम दो प्रेमियों के बीच पारदर्शी परदा है।

प्रत्येक मानव दो स्त्रियों से प्रेम करता है: एक उसकी कल्पना की रानी होती है और दूसरी अबतक उत्पन्न नहीं हुई।

o

जो मनुष्य नारी को क्षमा नहीं कर सकता, उसे उसके महान् गुणों का उपयोग करने का कभी अवसर प्राप्त नहीं होगा।

o

जो प्रेम अपने को नित्य नवीन नहीं रखता, वह पहले आदत का रूप धारण कर लेता हैं और फिर दासता में परिवर्तित हो जाता हैं।

o

प्रेमी एक-दूसरे की अपेक्षा अपने अन्तर को अधिक प्यार करते हैं।

o

प्रेम और संशय कभी साथ-साथ नहीं चलते।

o

प्रेम प्रकाश का एक शब्द हैं, जो कि प्रकाश के ही हाथों से, प्रकाश के ही पृष्ठ पर लिखा जाता हैं।,

o

मित्रता अवसरवादिता नहीं है, वह तो सदा ही एक मधुर उत्तरदायित्व है।

o

यदि तुम अपने मित्र को नहीं समझते, तो तुम किसी भी दशा में उसे कभी भी नहीं समझ सकोगे।

o

तुम्हारा सर्वाधिक उज्ज्वल परिधान वह है, जिसे दूसरे ने बुना है,

तुम्हारा सर्वाधिक प्रीतिकर भोजन वह है, जिसे तुम दूसरे व्यक्ति की मेज पर खाते हो;

और तुम्हारा सर्वाधिक सुविधाजनक शयन वह है, जो दूसरे के गृह में हो।

अब तुम ही बताओ, तुम अपने को किस प्रकार अन्य आत्माओं से पृथक रख सकते हो?

o

तुम्हारा मस्तिष्क और मेरा हृदय कभी भी एकमत नहीं होंगे; जबतक तुम्हारा मस्तिष्क कई दिशाओं में बहना न छोड़ दे और मेरा हृदय अस्पष्टता से बाहर न आ जाय।

o

हम एक-दूसरे को कभी न समझ सकेंगे जबतक हम भाषा को शब्दों में सीमित न कर देंगे!

o

जबतक मेरा हृदय टूट न जाय, वह किस तरह उन्मुक्त हो सकता है?

केवल महान् दुःख या महान् प्रसन्नता ही तुम्हारे सत्य को प्रकट कर सकती है।

यदि तुम्हें अपनी वास्तविकता प्रकट हो जाय, तो या तो तुम सूर्य की धूप में नग्न नृत्य करने लगोगे या स्वयं दुहरे हो जाओगे।

o

सन्तोष के सम्बन्ध में जो कुछ भी हम कहते हैं, यदि उसपर ध्यान दे, तो न तो कोई नदी समुद्र की राह खोजेगी और न कोई शरद् वसन्त के रूप में परिवर्तित होगी।

यदि वह हमारी बातों पर भी ध्यान दे, तो हममें से कितने इस उन्मुक्त वायु का सेवन कर सकेंगे ?

o

जब तुम अपनी पीठ सूर्य की तरफ करोगे तो केवल अपनी छाया ही देखोगे।

o

तुम दिवस के सूर्य के सामने स्वतन्त्र हो और रात्रि के ताराओं के सामने उन्मुक्त हो।

और तुम तब भी स्वतंत्र हो जब न तो सूर्य होता है. न चन्द्र और न तारे !

इससे भी अधिक, तुम तब स्वतंत्र हो, जब तुम विश्व की समस्त वस्तुओं से अपनी आंखें मूंद लेते हो।

किन्तु जिसे तुम प्यार करते, उसके तुम दास हो, क्योंकि तुमने उससे प्रेम किया है।

और उसके प्रति दास हो, जिसने तुम्हें प्यार किया है; क्योंकि वह तुम्हें प्यार करता है।

o

मन्दिर के द्वार पर हम सभी याचक हैं, और हममें से प्रत्येक ही उस अधिपति के अन्दर प्रवेश और बाहर आगमन के समय उसकी कृपा के प्रसाद का अपना भाग पाता है।

किंतु हममें से प्रत्येक एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु है। यह उस महान अधिपति को क्षुद्र सिद्ध करने का एक ओछा प्रयास है।

o

अपनी क्षुधा से अधिक तुम भोजन नहीं कर सकते। तुम्हारे उस भोजन का एक भाग तुम्हारे सहचर का है और एक भाग आकस्मिक अतिथि के लिए भी सुरक्षित रखना ही चाहिए।

o

यदि गृहों में अतिथि-सत्कार न हो तो वे श्मशान-स्थल-मात्र रह जायंगे।

o

करुणार्द्र भेड़िये ने अनजान, भोली भेड़ से कहा, "तुम हमारे गृह को पवित्र न करोगी ?"

भेंड़ ने नम्रता से उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे घर पर अवश्य आती, यदि उसका अर्थ तुम्हारे उदर से न होता।

o

मैंने आते हुए अतिथि को द्वार पर ही रोकते हुए कहा, "श्रीमन् ! प्रवेश करते समय अपने पैरों को न पोंछिए, बल्कि जाते समय पोंछकर जाइए।"

o

उदारता उस वस्तु के दान में नहीं, जिसकी तुम्हारी अपेक्षा दूसरे को अधिक आवश्यकता है, प्रत्युत् उस वस्तु के दान में है, जिसकी दूसरे की अपेक्षा तुम्हें स्वयं अधिक आवश्यकता है।

o

तुम वस्तुतः दानी हो, यदि दान के समय तुम अपना मुंह फेर लो, ताकि दान ग्रहण करने वाले की लज्जा को न देख सको।

o

विश्व के धनाढ्यतम तथा निर्धनतम व्यक्ति में उतना ही अन्तर है, जितना कि एक घण्टे की प्यास और एक दिन की भूख में।

o

प्रायः अतीत के ऋणों को हम भविष्य की निधि से चुकाने का प्रयत्न करते हैं।

प्रायः मुझे भी देवदूत और शैतान के दर्शन होते रहते हैं, पर मैं उनसे शीघ्र ही छुटकारा पा लेता हूं।

जब देवदूत आता है तो मैं एक पुरानी प्रार्थना दुहरा देता हूं और वह दयार्द्र हो उठता है।

और, जब शैतान आता है तो मैं एक पुराना पाप-कर्म कर डालता हूं और वह मेरे पास से निकल जाता है।

o

यद्यपि यह कारावास बुरा नहीं, पर मुझे इस कमरे, और अगले कमरे के बीच की दीवार पसन्द नहीं है।

विश्वास रखना कि न तो यह बात मैं प्रहरी से कहूंगा और न भवन-निर्माता से।

o

मछली मांगने पर तुम्हें उपहार में सर्प देने वालों के पास सम्भवतः उपहार के योग्य केवल सर्प ही हैं। वे इसे भी उदारता ही समझते हैं।

o

कुटिलता कभी-कभी सफल हो जाती है, पर सदा ही आत्म-घाती सिद्ध होती है !

o

वास्तव में तुम क्षमाशील हो, जब तुम क्षमा करते हो उन कातिलों को, जिन्होंने कभी कत्ल नहीं किया; उन चोरों को, जिन्होंने कभी चोरी नहीं की; और उन असत्यवादियों को, जिन्होंने कभी असत्य नहीं बोला।

o

जो व्यक्ति भद्र और अभद्र के विभेदक स्थल को इंगित कर सकता है, वही प्रभु के परिधान को स्पर्श कर सकता है।

o

तुम्हारा हृदय एक ज्वालामुखी है। फिर तुम कैसे यह आशा करते हो कि तुम्हारे हाथ के फूल खिलते रहें !

o

कई अवसरों पर लोग मुझे धोखा देने और लूटने का प्रयत्न करते हैं। मैं उनके अज्ञान पर हंस देता हूं, क्योंकि वे समझते हैं कि मुझे अपने लुटने और धोखे में आ जाने का पता नहीं चला।

आत्म-प्रवंचना का यह भी एक प्रकार है।

o

मैं उसके लिए क्या कह सकता हूं कि जो नियोजक होकर भी नियोजित की-सी अभिव्यक्ति करे ?

o

जो अपने धूल-धूसरित हाथों को तुम्हारे उज्ज्वल परिधान से पोंछना चाहता है, तुम उसे वे वस्त्र उतारकर दे दो। सम्भवतः वह इसे पुनः-पुनः चाहेगा, पर तुम्हें इसकी कभी आवश्यकता अनुभव नहीं होगी।

o

यह भी दयनीय है कि धन की हेरा-फेरी करनेवालों को उद्यान-विद्या में कुशलता प्राप्त नहीं होती !

o

अपने अन्तर्हित दूषणों को अपने प्रख्यात गुणों की धवलिमा से आच्छादित मत करो।

मैं दूषणों को भी अपनी ही वस्तु समझता हूं।

केवल इसलिए कि मेरी उपस्थिति में दूसरा व्यक्ति सुख और सुविधा पा सके, मैंने प्रायः कितनी ही बार अपने-को उन अपराधों का भी दोषी घोषित किया है, जिन्हें मैंने कभी नहीं किया।

o

जीवन का आवरण अन्तरतम के रहस्य का आवरण है।

o

तुम दूसरे व्यक्तित्व का अनुशीलन सदा आत्म-ज्ञान के अनुरूप ही कर सकते हो।

तो क्या तुम बता सकोगे हममें से कौन दोषी है और कौन निर्दोष ?

o

वस्तुतः सच्चा वही है, जो अपने को तुम्हारे दुराचरणों का आधा अपराधी स्वीकार करता है।

o

मानव-कृत मर्यादाओं को दो ही मनुष्य तोड़ते हैं : या तो पागल या फिर अति बुद्धिशाली। वास्तव में वे दोनों ही प्रभु के सर्वाधिक समीप हैं।

o

किसी बात के समझ में आ जाने पर ही तुम उसके लिए अधिक सचेत हो जाते हो।

o

प्रभो ! मेरा कोई शत्रु नहीं है। यदि कभी कोई मेरा शत्रु हो भी तो वह मेरे बराबर शक्तिवाला हो, ताकि अन्ततोगत्वा सत्य की ही विजय हो सके।

o

अपने उग्रतम शत्रु के प्रति तुम निश्चय ही मित्र बन जाओगे, जब तुम दोनों ही यह संसार त्याग दोगे।

o

बहुधा मानव अपनी आत्मा की रक्षा के नाम पर भी आत्म-हत्या कर लेता है।

o

बहुत समय पूर्व एक मानव अत्यधिक प्रिय और प्रेम होने के कारण फाँसी पर चढ़ाया गया था।

और, आश्चर्य ! कल ही मैं उससे तीन बार मिला !

प्रथम बार वह पुलिस के एक व्यक्ति से एक वेश्या को कारागृह में न ले जाने की प्रार्थना कर रहा था।

द्वितीय दर्शन में वह एक बहिष्कृत के साथ मद्यपान कर रहा था।

और, तृतीय बार वह एक सुधारक से मन्दिर के अन्दर ही मुक्केबाजी कर रहा था।

o

यदि पाप और पुण्य की, की जाने वाली व्याख्या सत्य है, तो मेरा जीवन अपराधों की केवल एक शृंखला-मात्र है।

o

दया अर्ध-न्याय का नाम है।

o

जिसके भाई के प्रति मैंने अन्याय किया होगा, सिर्फ वही व्यक्ति मुझसे अन्याय कर सकता है।

o

कारागृह भी ओर जाते हुए नागरिक को देखकर मन कह उठता है, "सम्भवतः यह किसी छोटी कैद से बचना चाहता होगा!"

और जब किसी व्यसनी को मद्यपान से मदहोश पाता हूं, तो विचार उठता है, "सम्भवतः वह इससे भी किसी बुरे और अभद्र व्यसन से बचना चाहता होगा!"

o

प्रायः मुझे आत्म-रक्षा में घृणा का हथियार बरतना पड़ता हैं। यदि मैं अधिक सबल होता तो सम्भवतः इतने ओछे हथियार का आश्रय न लेना पड़ता।

o

वह कितना मूर्ख है, जो कृत्रिम मुस्कान से नेत्रों की घृणा को ढकना चाहता है।

o

सिर्फ निचले व्यक्ति ही मुझसे ईर्ष्या या घृणा कर सकते हैं।

मेरे प्रति कभी किसी ने ईर्ष्या या घृणा नहीं की, क्योंकि मैं किसी से भी बड़ा नहीं।

केवल मुझसे बड़े व्यक्ति ही मेरी प्रशंसा या मानहानि कर सकते हैं।

परन्तु आजतक किसी ने मेरी मानहानि नहीं की, क्योंकि मुझसे कोई बड़ा नहीं है।

o

"मैं तुम्हें नहीं समझता"—तुम्हारा यह कथन, मेरी योग्यता से बढ़कर, मेरा सम्मान है, किन्तु तुम्हारे लिए, तुम्हारे अयोग्य, घोर अपमान है।

o

मैं कितना क्षुद्र हूं!

जब जीवन मुझे स्वर्ण देता है, मैं तुम्हारे प्रयत्नों को चांदी से ढक देना चाहता हूं। उसपर भी मैं स्वयं को उदार समझता हूं।

o

जब तुम जीवन के मध्य में पहुंचोगे, तब तुम जानोगे कि न तुम किसी निम्नतम प्राणी से ऊंचे हो और न किसी उच्चतम प्राणी से निम्न।

o

कितना अद्‌भुत है कि तुम मन्द गति पर तो करुण हो जाते हो, मन्द मति पर नहीं!

और, अन्धे नेत्रोंवाले को तो अधिक पूछते हो, अन्धे हृदयवाले को नहीं !

o

पंगु व्यक्ति के लिए यही श्रेयकर है कि वह अपने लकड़ी के सहारों को, किसी शत्रु के सिर पर मारकर, तोड़ न दे।

o

वह कितना दृष्टि-हीन है, जो अपनी जेब के रुपयों के प्रतिदान में तुम्हारा हृदय छीनना चाहता है।

o

जीवन एक समूह-यात्रा है,

जिसे मन्द गति व्यक्ति अधिक त्वरित समझकर अलग हो जाता है।

और, त्वरित-गति व्यक्ति मन्द गतिवाला समझकर छोड़ देता है।

o

यदि सचमुच पाप की कोई सत्ता है, तो हममें से कुछ इसे पूर्वजों के पदचिन्हों पर चलते हुए, भूत के नाम पर, करते हैं; और

कुछ इसे भावी सन्ततियों के लिए, भविष्य-निर्धारण करते हुए करते हैं।

o

वस्तुतः भद्र वही है, जो बुरा समझे जानेवाले हर प्राणी के साथ अपने को समरूप पाता है।

o

हम सभी कैदी हैं—कुछ बन्द कारागृह के और कुछ उन्मुक्त कारा के।

o

आश्चर्य ! सुकृतों की अपेक्षा हम अपने दुष्कृत्यों का अधिक उत्साह से बचाव करते हैं।

o

यदि हम सब परस्पर एक-दूसरे के सम्मुख अपने पापों को स्वीकार करलें, तो हमें अपनी ही मौलिकता की कमी पर हंसी आ जायगी।

और यदि हम सब एक-दूसरे के पुण्यों की ओर इंगित करने लगें, तब भी ऐसा ही होगा।

o

जबतक मानव-रचित धारणाओं के विपरीत आचरण नहीं करता, क्योंकि मानव-रचित नियमों से ऊपर रहता है।

पर, उन धारणाओं को तोड़ने के बाद न तो वह किसी से ऊपर रहता है और न नीचे।

o

शासन तुम्हारे और मेरे बीच का एक समझौता है, पर तुम और मैं प्रायः ही ठीक नहीं होते।

o

अपराध या तो आवश्यकता का दूसरा नाम है या वह बीमारी का एक पार्श्व है।

o

पर दोषान्वेषण में तत्परता से बढ़कर भी क्या कोई दोष है ?

o

यदि अन्य व्यक्ति तुम पर हंसता है, तो तुम्हें उस पर दयालु होना चाहिए। यदि प्रत्युत्तर में तुम भी उस पर हंसते हो, तब तुम स्वयं को कभी क्षमा नहीं कर सकोगे।

यदि कोई तुम्हें चोट पहुंचाता है, तो उसे भूल जाओ। यदि तुमने भी प्रतिकार में उसे घायल किया तो सत्य ही वह बात सदा याद रहेगी।

वस्तुतः वह दूसरा व्यक्ति तुम्हारा ही अत्यधिक कोमल आत्मा है, जिसने वह शरीर धारण कर लिया है।

o

तुम कितने असावधान हो, जबकि अन्य मनुष्य तुम्हारे पक्षों के सहारे उड़ते हैं और तुम उनको एक पंख भी नहीं दे सकते ?

o

एक बार एक व्यक्ति मेरे पास आया और ठहरा। उसने मेरे ही यहां रोटी खाई और मद्य-पान किया। इतने पर भी वह मुझ पर ही हंसता हुआ चला गया।

जब वह फिर आया और रोटी तथा मद्य मांगने लगा तो मैं आवेश में आ गया।

स्वर्ग के देवता मेरी इस विवशता पर हंस पड़े।

o

घृणा एक मृतक शव है। तुममें से कौन समाधि-स्थल बनना चाहेगा ?

o

कत्ल किये जाने वाले व्यक्ति का ही सर्वोच्च सम्मान है कि वह स्वयं कत्ल करने वाला नहीं !

o

मानवता का वास्तविक स्वरूप शान्तिमय हृदय में है, वाचाल मन में नहीं।

o

वे मुझे पागल समझते हैं, क्योंकि मैं अपने कीमती दिनों को चन्द सोने के टुकड़ों के लिए नहीं बेचना चाहता।

और मैं उन्हें पागल समझता हूं कि उन्होंने समय को भी स्वर्ण से खरीदना चाहा।

o

उन्होंने ऐश्वर्य के समस्त प्रसाधन हमारे सम्मुख फैला दिये और हमने अपने हृदय और आत्माएं। परन्तु फिर भी वे अपने को गृहपति समझते हैं और हमें अतिथि !

o

मैं उन मानवों में तुच्छतम होना स्वीकार करूंगा, जो स्वप्न लेते हैं और उन्हें पूरा करने का प्रयत्न करते हैं।

उन मानवों में मैं महानतम पद भी स्वीकार नहीं करूंगा, जो न तो स्वप्न लेते हैं और न ही इच्छाएं पालते हैं ?

o

सबसे बढ़कर दया का पात्र तो वह है, जो अपने स्वप्नों और इच्छाओं को चांदी के चंद टुकड़ों के लिए विक्रय कर देता है।

o

हम सभी अपनी अभिलाषाओं के उच्चतम शिखर के आरोही हैं। यदि एक साथी हमारे साजो-सामान को चुरा लेता है तो हमें उस पर दया व्यक्त करनी चाहिए, क्योंकि हमें तो उसके कारण भार अनुभव होता था।

यह चोरी का भार उसके लिए चढ़ना दूभर कर देगा तथा उसका मार्ग लम्बा कर देगा।

और यदि तुम उसे हांफता हुआ देखो तो विनम्र भाव से उसे दो कदम सहायता पहुंचा दो। यह तुम्हारी चाल और भी त्वरित कर देगा।

o

तुम अपने ज्ञान की सीमा में ही किसी व्यक्ति को जान सकते हो।

और,तुम्हारा ज्ञान कितना सीमित है ?

o

मैं पराजित के प्रति विजयी के उपदेश को सुनना रुचिकर नहीं समझूंगा।

o

वास्तव में स्वतंत्र व्यक्ति वही है, जो किसी क्रीत दास के बोझ को धैर्यपूर्वक चुपचाप अपने कन्धों पर वहन करले।

o

हजारों वर्ष पूर्व मेरे पड़ोसी ने कहा, "मैं जीवन से घृणा करता हूं, क्योंकि यह केवल वेदना का प्रतिरूप है।"

और आज जब मैं शव-स्थान के पास से निकला तो एक समाधि पर जीवन को नर्तन करते पाया !

o

असंयम को संयम में परिणत होने की इच्छा का दूसरा नाम ही प्रकृतिगत संघर्ष है।

एकान्त साधना वह मूक आंधी है, जो हमारी सूखी शाखाओं

को झाड़ देती है, परन्तु हमारी जीवित मूलों को रसमय धरती के रसाक्त हृदय की गहराई तक पहुंचा देती है।

o

एक बार मैंने एक छोटे स्रोत से समुद्र का वर्णन किया तो उसने मुझे अतिवादी और काल्पनिक समझा।

और, एक दिन मैंने समुद्र से उस स्रोत का वर्णन किया तो उसने मुझे पर-निन्दक और हीन-वादी समझा।

o

घास के कीट की स्वर-लहरी की अपेक्षा चींटी की सलग्नता और परिश्रमशीलता की प्रशंसा करने वाले की दृष्टि सचमुच कितनी संकुचित है ?

o

इहलोक का उच्चतम गुण, सम्भव है, परलोक का निम्नतम गुण हो।

o

यदि भार और परिणाम को हम अधिक महत्ता न देते तो हम जिस प्रकार आज सूर्य के सम्मुख खड़े होते हैं, उसी प्रकार जुगनू के प्रकाश में भी खड़े होते।

o

कल्पनारहित वैज्ञानिक उस कसाई के समान है, जिसके अस्त्र कुण्ठित हों और तुला जीर्ण-शीर्ण हो।

पर, तुम क्या हो, क्योंकि हम सब शाकाहारी तो हैं नहीं !

o

तुम्हारे गान को बुभुक्षित व्यक्ति उदर की राह सुनता है।

o

नवजात शिशु की अपेक्षा वृद्ध के लिए मृत्यु अधिक समीप नहीं है और न जीवन किसी के लिए सुदीर्घ है।

o

यदि वास्तव में तुम्हें सत्य बात कहने में हिचक नहीं है, तो भी उसे सौन्दर्य के साथ कहो, अन्यथा शांत रहो, क्योंकि हमारे ही पड़ोस का एक व्यक्ति अपने प्राण-विसर्जन कर रहा है।

o

यह सम्भव है कि मानवों का दाह-संस्कार देवताओं की वैवाहिक दावत हो !

o

एक भुलाया हुआ सत्य समाप्त हो सकता है, परन्तु वह हजारों वास्तविकताओं और सच्चाइयों को वसीयत के रूप में छोड़ सकता है, जो उसके दाह-संस्कार और समाधि-निर्माण में काम आ सके।

o

वस्तुतः हम अपनी आत्मा से ही बातें करते हैं, पर बहुधा हम इतने ऊंचे बोलने लगते हैं कि दूसरे भी हमें सुन सकें।

o

स्पष्ट उस वस्तु को कहते हैं, जिसका हमें कभी ज्ञान न हो, जबतक कि कोई इसे साधारण रूप में प्रकट न कर दे।

o

यदि स्वर्ग-गंगा का प्रवाह मेरे हृदय में न हो तो मैं उसे किस प्रकार देख या जान सकता हूं ?

o

जबतक मैं चिकित्सकों में चिकित्सक बनकर न रहूंगा, तब तक वे कैसे जानेंगे कि मैं ज्योतिष जानता हूं।

o

सम्भवतः समुद्र की परिभाषा में सीप ही मुक्ता है, और, सम्भवतः, समय की परिभाषा में कोयला ही हीरक है।

o

कीर्ति, प्रकाश-स्थित वासना की परछाईं मात्र है।

o

सौन्दर्य से परे न तो धर्म है और न विज्ञान।

o

प्रत्येक महान पुरुष में, जिसे भी मैं जानता हूं, एक-न-एक कमी थी, और यह कमी ही थी, जिसने उसे निष्क्रिय, उन्मत्त या आत्म-हत्यारा होने से बचा लिया।

o

वस्तुतः महान् वही है, जो न तो किसी का शासन मानता है और न किसी पर शासन करता है।

o

मनुष्य को मध्यम श्रेणी का सिद्ध करने के लिए यही बात पर्याप्त नहीं है कि वह अपराधियों को भी मारता है और धर्मावता [illegible] भी।

o

सहिष्णुता प्रेम ही है, जो कि महानता के रोग से ग्रस्त है।

o

मतभेद दो मस्तिष्कों की स्वल्पतम दूरी है।

o

मैं ही ज्वाला हूं, और मैं ही शुष्क केश-पुञ्ज हूं! मेरा ही एक पार्श्व मेरे ही दूसरे पार्श्व को ग्रस लेता है।

o

हम सभी उस पवित्र पर्वत के उच्चतम शिखर के अन्वेषक

हैं। क्या हमारा मार्ग छोटा न हो जायगा, यदि हम भूत को मार्ग-दर्शक न समझकर एक मानचित्र समझें?

o

वह बुद्धि अपने अस्तित्व को समाप्त कर देती है, जो रुदन के प्रति अभिमान, हास्य के प्रति उदासी और पर-हित के प्रति स्वार्थपरता धारण कर लेती है।

o

यदि तुम्हारे सम्पूर्ण ज्ञान से मैं स्वयं को भर लूं, तो जो कुछ भी तुम्हारे ज्ञान से परे है, उससे कौन-सी जगह भरूंगा?

o

मैंने वाचाल से मौन, असहिष्णु से सहन-शीलता और निर्दय से दया का पाठ पढ़ा है। परन्तु कितना आश्चर्य है कि मैं स्वयं अपने इन गुरुओं के प्रति कृतघ्न हूं?

o

अन्ध-विश्वासी पुरुष पाषाण-बधिर वक्ता होता है।

o

ईर्ष्यालु का मौन भी अत्यधिक ध्वनि-मय होता है।

o

जबकि तुम सम्पूर्ण ज्ञातव्य को जान चुकते हो, तब तुम वस्तुतः आत्मिक अभिव्यक्ति के प्रारम्भ में पहुंचते हो।

o

अतिवादिता वह सत्य है, जिसने अपनी मर्यादा खो दी है।

o

यदि तुम केवल उतना ही देखते हो, जितना प्रकाश से प्रकाशित होता है और उतना ही सुन सकते हो, जितना ध्वनि

से प्रसारित होता है, तो वास्तव में न तो तुम देखते हो और न तुम सुनते हो।

o

तुम एक ही समय में हंसते हुए निर्दयता को धारण नहीं कर सकते।

o

मेरे हृदय के समीपतम है;

वह राजा, जो राज्य से हीन हो चुका है।
वह रंक, जो भीख मांगने में अनभिज्ञ है।

o

अनुदार विजय की अपेक्षा लज्जामय विफलता अधिक भद्र है।

o

धरती माता को तुम कहीं से भी खोदो, इसमें निधियां भरीं पाओगे।

केवल इसे खोदते समय कृषक की-सी श्रद्धा होनी चाहिए।

o

बीस शिकारी कुत्तों के साथ बीस घुड़सवारों द्वारा पीछा की जाती हुई लोमड़ी बोली, "निश्चय ही वे मुझे मार डालेंगे। पर वे कितने दयनीय और मूर्ख हैं?

"निश्चय ही यह योग्य न होगा, यदि बीस गधों पर चढ़कर बीस लोमड़ियां, बीस ही भेड़ियों को साथ लेकर, पीछा करें और एक मनुष्य को मार डालें।"

o

हमारा मस्तिष्क ही हमारे द्वारा बनाये गये नियमों के प्रति आदरवान् है, हमारी आत्मा कभी नहीं।

o

मैं भी एक यात्री और अन्वेषक हूं और प्रायः नित्य ही, अपनी ही आत्मा में एक-न-एक नया स्थल खोज लेता हूं।

०

एक नारी ने सहज प्रतिवाद करते हुए कहा, "नहीं, श्रीमन्! यह एक धर्मयुद्ध ही था। मेरा पुत्र भी इसमें मारा गया है।"

०

मैंने जीवन से कहा, "मैं मृत्यु को बोलते हुए सुनना चाहता हूं।"

और जीवन ने उच्चतर स्वर में प्रत्युत्तर दिया, "तुम भी सुन लो।"

जब हम जीवन के समस्त रहस्यों को सुलझा लेते हैं, तभी हम मृत्यु की कामना करते हैं। मृत्यु भी वस्तुतः जीवन का ही एक रहस्य है।

०

जन्म और मरण, वीरता की दो भद्रतम अभिव्यक्तियां हैं।

०

प्रिय मित्र! जीवनपर्यन्त हम परस्पर अपरिचित ही रहेंगे— स्वयं आत्मा के लिए और एक-दूसरे के लिए।

उस दिन तक, जिस दिन कि तुम बोलोगे और मैं ध्यानपूर्वक सुनूंगा,

तुम्हारे स्वर को अपना स्वर समझकर,

और जबकि मैं तुम्हारे सम्मुख खड़ा होकर यह समझूंगा कि मैं एक दर्पण के सम्मुख खड़ा हूं!

०

वे कहते हैं, "जब तुम स्व-रूप को समझ लोगे, तभी विश्व-रूप को समझ सकोगे।"

पर मेरी धारणा है, "जिस दिन मैं विश्व को पहचान लूंगा उसी दिन स्वयं को समझ सकूंगा।"

o

मानव के दो रूप हैं: एक वह जो घने अन्धकार में भी जागता है, और दूसरा वह, जो प्रकाश में भी सोता रहता है।

o

वास्तविक संन्यासी वह है, जो इस सकल विश्व को खण्ड-खण्ड रूप में देखना त्यागकर, इसे अविकल ब्रह्माण्ड रूप की भावना से देखता है।

o

विद्वान और कवि के अन्तर में एक सजीव क्षेत्र है, जिसे यदि विद्वान पार कर ले तो वह 'मनीषी मानव' बन जाता है, और यदि कवि उसे पार कर ले तो वह 'धर्मावतार' बन जाता है।

o

एक दिन मैंने देखा कि दार्शनिक, अपने सिरों को टोकरियों में लिये हुए बाजार में खड़े चिल्ला रहे थे, "बुद्धि! विक्रय के लिए बुद्धि!"

बेचारे दार्शनिक! उन्हें अपने हृदय के तर्पण के लिए अपने मस्तिष्क बेचने ही पड़ते हैं।

o

एक दार्शनिक ने एक भंगी से कहा, "मुझे तुम पर दया आती है। तुम्हारा कार्य सचमुच अत्यन्त अभद्र और कठिन है।"

प्रत्युत्तर में भंगी ने कहा "धन्यवाद, श्रीमन्, कृपया यह भी बताते जावें कि आपका व्यवसाय क्या है ?"

दार्शनिक ने सगर्व कहा, "मैं मनुष्यों के मनों का, कर्त्तव्यों का और उनकी इच्छाओं का अध्ययन करता हूं।"

इसपर उस निर्धन भंगी ने एक हल्की मुसकान के साथ उत्तर दिया, "श्रीमन्, मुझे भी आप पर दया आती है।"

o

जिसमें सत्य को सुनने की शक्ति है, वह उतना ही समर्थ है, जितना सत्य को कहने वाला।

o

कोई भी मानव आवश्यकता और विलास के अन्तर को स्पष्ट नहीं कर सकता। यह सिर्फ देवदूतों की शक्ति है, और देवदूत सदा बुद्धिमान और विपथ-रक्षक होते हैं।

सम्भवतः देवदूत हमारे, उचित स्थल पर, उचित विचार होते हैं।

o

वास्तविक युवराज वही है, जो अपना सिंहासन फकीरों के हृदय में स्थिर करता है।

o

जितना तुम दे सकते हो, उदारता उससे अधिक दे रही है। और जितनी तुम्हें आवश्यकता है, अभिमान उससे कम ग्रहण कर रहा है।

o

वस्तुतः तुम किसी व्यक्ति-विशेष के ऋणी नहीं हो। तुम अखिल विश्व के सर्वस्व-ऋणी हो।

o

अतीत के सभी निवासी आज भी हमारे साथ ही निवास कर रहे हैं। निश्चय ही, हममें से कोई भी अनुदार यजमान बनना नहीं चाहेगा।

o

जो सर्वाधिक कामना करता है, वह सर्वाधिक आयु प्राप्त करता है।

o

लोग कहते हैं, "झाड़ी में उलझे दस पक्षियों की अपेक्षा हाथ का एक पक्षी अधिक उपयुक्त है।"

और मैं कहता हूं, "झाड़ी का एक पक्षी और उलझा पंख, हाथ के दस पक्षियों से अधिक उपयुक्त है।"

तुम्हारे द्वारा झाड़ी के उस पंख की खोज ही संघर्षमय जीवन है, बल्कि इससे भी बढ़कर वह पंख स्वयं एक जीवन है।

o

इस संसार में केवल दो ही तत्व हैं: सुन्दरता और सत्य। वह सौन्दर्य, जो कि प्रेमियों के हृदय में निवास करता है और वह सत्य, जो कि कृषिकारों के बाहुओं में निवास करता है।

o

महान सौन्दर्य मुझे अभिभूत कर लेता है, परन्तु महान्तम सौन्दर्य मुझे स्वतः प्रभाव से भी मुक्त कर देता है।

सौन्दर्य का निरीक्षण करने वाले की आंखों की अपेक्षा, सौन्दर्य की कामना करने वाले हृदय में वह अधिक समुज्ज्वल होकर चमकता है।

o

मैं उस मनुष्य का प्रशंसक हूं, जो अपना मन मेरे सम्मुख खोलकर रख देता है।

मैं उसका आदर करता हूं, जो अपने स्वप्नों को मुझ पर प्रकट कर देता है।

न जाने, मैं क्यों लज्जालु हूं। अपने सेवक के सम्मुख भी लज्जित हूं।

o

उपहार प्राप्त करने वाले पहले राजाओं की सेवा में अभिमान समझते थे।

अब वे भिखमंगों की सेवा करके अपना समादर मांगते हैं।

o

देवगण जानते हैं कि बहुत-से क्रियाशील प्राणी, स्वप्नमय जगत में विचरने वालों की मधुरता से अपना भोजन करते हैं।

o

समझ एक आवरण है। यदि तुम इसे फाड़ डालो तो तुम देखोगे कि या तो प्रतिभा उत्तेजित है या चतुराई स्वयं उलझ गई है।

o

सुलझा मस्तिष्क मुझे समझ प्रदान करता है और निष्क्रिय निष्क्रियता! मैं समझता हूं, वे दोनों ही ठीक हैं।

केवल हृदय में अन्तर्हित रहस्यों वाला व्यक्ति ही हमारे हृदय के रहस्यों को सुलझा सकता है।

o

जो तुम्हारे सुखों का ही भागी बनना चाहता है, दुखों

का नहीं, वह स्वर्ग के सात द्वारों में से एक की चाबी खो देता है।

o

वस्तुतः निर्वाण की सत्ता है:

भूखी भेड़ को हरी चरागाह तक पहुंचाने में;

अपने पुत्र को सुला देने में,

और अपनी कविता की आखिरी पंक्ति लिखने में।

o

अनुभव करने से बहुत पूर्व ही हम अपनी प्रसन्नताओं और विषादों को पसन्द कर लेते हैं।

o

अवसाद दो उद्यानों के बीच की दीवार है।

o

जब भी तुम्हारा प्रसाद या अवसाद बढ़ने लगता है, तुम्हारा विश्व छोटा होता जाता है।

o

इच्छा अर्ध-जीवन है, और अन्यमनस्कता आधी मृत्यु।

o

आज के हमारे अवसाद की कठिनतम बात, कल की हमारी प्रसन्नता की याद है।

o

मुझसे कहा जाता है, "इहलोक के प्रसाद या परलोक की शांति में से किसी एक को चुन लो?"

और मैं उनसे कहता हूं, "मैंने दोनों को ही चुन लिया है— इहलोक के आनन्दों और परलोक की शांति को।

"क्योंकि मैं जानता हूं कि उस विराट् कवि ने एक ही कविता लिखी है। वही समझी भी पूर्णता से जाती है और उसका गान भी पूर्ण रूप में संभव है।"

o

श्रद्धा हृदय में एक शाद्वल के समान है। वहां तक तर्कशील समुदाय कभी नहीं पहुंच सकेगा।

o

जब तुम अपनी सर्वाधिक उच्चता पर पहुंच जाओगे, तब तुम सिर्फ इच्छा-शक्ति के लिए इच्छा करोगे, भूख जगाने के लिए भूखे रहोगे और किसी उच्चतम पिपासा के लिए पिपासाकुल रहोगे।

o

यदि तुम अपने रहस्य वायु को बताओगे, तो तुम्हें वह रहस्य पेड़ों तक पहुंचने के लिए उसे दोष नहीं देना चाहिए।

वसन्त के सुमन शरद् के वे स्वप्न हैं, जो देवदूतों की प्रातराश की मेज पर वर्णन किये जाते हैं।

o

एक दुर्गंधित जन्तु ने गुलाब के फूल से कहा, "देखो! मैं कितनी त्वरित गति से भागता हूं। तुम न तो भाग सकते हो और न सरक सकते हो।"

गुलाब के फूल ने उत्तर दिया, "मेरे त्वरित-गति मित्र! जरा और तेज दौड़ो!"

o

मार्गों के विषय में खरगोशों की अपेक्षा कबूतर अधिक बता सकते हैं।

o

कितना अद्भुत है ? जिन प्राणियों के रीढ़ की हड्डी नहीं होती, उनकी पीठ की खाल अत्यन्त कठोर होती है ।

o

सबसे अधिक वाचाल सर्वाधिक मन्दमति है और एक वक्ता में तथा नीलामी की बोली करने वाले में बहुत कम अन्तर है ।

o

तुम्हें कृतज्ञ होना चाहिए कि न तो तुम्हें पिता की ख्याति पर और न चाचा की सम्पत्ति पर जीना पड़ेगा ।

परन्तु सर्वाधिक कृतज्ञ तो तुम्हें इस बात पर होना चाहिए कि तुम्हारी ख्याति और सम्पत्ति पर भी कोई जीने वाला नहीं है ।

o

जबकि जादूगर अपनी गेंद की पकड़ में चूक जाता है, केवल तभी वह मुझे रुचिकर लगता है ।

o

ईर्ष्यालु, वस्तुतः, अज्ञान में मेरी प्रशंसा कर रहा होता है ।

o

पर्याप्त समय से तुम जननी की निद्रा के स्वप्न थे, और तब वह जागी तुम्हें जन्म देने के लिए ।

o

जाति का मूल तुम्हारी माता की इच्छाओं में सन्निहित है ।

o

मेरे माता और पिता ने पुत्र की कामना की और मुझे प्राप्त किया ।

और मैंने माता और पिता की कामना की तो मुझे मिले रात्रि और समुद्र !

o

हमारी कुछ सन्तानें हमारे सन्तुलन का परिणाम हैं और कुछ हमारे लिए शोक का रूप हैं।

o

रात्रि के आगमन पर तमसावृत्त तुम, अन्धकार की भावना के साथ लेट जाते हो।

और प्रभात के आगमन पर भी तमसावृत्त तुम उठ जाते हो, और दिन से भावनामय होकर कहते हो, "मैं अब भी अन्धकार में हूं।"

दिवस और रात्रि के साथ यह समान अभिनय मूढ़तापूर्ण है।

वे दोनों ही तुम पर हंसते होंगे!

o

धुन्ध से आवृत्त पर्वत कोई छोटी पहाड़ी नहीं है, वर्षा में भीगने वाला हर समुन्नत वृक्ष नदी तट का नमित वृक्ष नहीं है।

o

देखो! यह अद्‌भुत विरोधाभास है। निम्नतम और उच्चतम स्तर परस्पर अधिक समीप हैं, मध्यम स्तर की अपेक्षा वह उन दोनों से ही दूर है।

o

जब मैं तुम्हारे सम्मुख अपने को दर्पण बनाकर खड़ा हुआ, तुमने मुझमें झांका और अपनी ही प्रतिमूर्ति पाई।

तब तुमने कहा, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं।"

वस्तुतः तुम मेरे अन्दर भी निज को प्यार कर रहे थे।

o

अब तुम अपने पड़ोसी के प्रति प्रीति से आनन्दित होना

शुरू कर देते हो, इस प्रीति की 'गुण' रूप में सत्ता समाप्त हो जाती है।

o

स्नेह, जो नित्य नया नहीं उभरता, निश्चय ही समाप्त हो जाता है।

o

तुम एक ही समय में, यौवन और तत्सम्बन्धी ज्ञान, दोनों को एक साथ प्राप्त नहीं कर सकते,

क्योंकि यौवन स्वयं इतना व्यस्त जीवन है, जिसे समझना कठिन है।

और ज्ञान भी अपने जीवन के अन्वेषण में अत्यन्त व्यस्त है।

सम्भवतः तुम भी खिड़की में बैठकर सड़क पर विचरने-वालों को झांकते होगे। इस बीच सम्भवतः तुम्हें दिखाई देगा कि पथ के एक ओर संन्यासिन जा रही है और दूसरी ओर वेश्या।

और सम्भवतः तुम मन में कह उठते होगे, "कितनी भद्र हैं यह! और कितनी पतित है वह!"

पर यदि दो मिनट भी आंखें मूंदकर अन्तस् की ध्वनि को सुनो तो तुम्हें एक हल्की-सी ध्वनि गूंजती प्रतीत होगी, "कोई मुझे प्रार्थना में ढूंढ़ता है, कोई पीड़ा में, और दोनों की ही आत्माओं में मेरा निवास सुरक्षित है।

o

प्रति सौ वर्ष बाद लेबनान के पहाड़ी बगीचों में नजारेथ के ईसा और क्रिश्चियन के ईसा आपस में मिलते हैं। वे बहुत

समय तक वार्तालाप करते हैं और प्रत्येक बार नजारेथ का ईसा क्रिश्चियन के ईसा से यह कहता हुआ विदा होता है, "मेरे मित्र मुझे भय है, हम कभी भी सहमत न हो सकेंगे।"

o

प्रभु अत्यधिक धनिकों को भी भोजन प्रदान करता है।

o

महान् पुरुष के हृदय के दो पहलू होते हैं : एक रक्त स्रवित करता है, दूसरा धैर्यपूर्वक पृथक रहता है।

o

यदि कोई ऐसा असत्य बोले, जिससे न तो तुम्हें हानि हो और न किसी और को, तो क्यों नहीं तुम अपने मानस में यह समझ लेते कि उसका सत्य-भण्डार उसकी कल्पनाओं के लिए अत्यन्त लघु है और उसे इन कल्पनाओं को विस्तृत जगत में खुला बिखेरना पड़ता है ?

o

प्रत्येक बन्द द्वार के पीछे न जाने कितना अद्भुत रहस्य छिपा है !

o

प्रतीक्षा समय के खुर का पर्याय है।

o

क्या तुम्हारे भवन की पूर्वीय भित्ति में एक नया वातायन तुम्हें नई आपदा प्रतीत होती है ?

o

तुम उस व्यक्ति को भूल सकते हो, जिसके साथ तुम

परिहास करते रहे हो; पर उसको भुलाना असम्भव है, जिसके दुःख में तुमने भी आंसू गिराये हैं।

o

लवण के अन्दर अवश्य ही कोई अद्भुत पवित्रता है। यह हमारे आंसुओं में भी है और समुद्र में भी पाया जाता है।

o

हमारा परम पिता परमात्मा अपनी कृपामय पिपासा में हम सबको पी लेगा, ओस की बूंद को भी और आंसू की बूंद को भी।

o

तुम अपनी विशाल आत्मा के एक खण्ड-मात्र हो, वह मुख हो, जो रोटी खोजता है और उस नेत्ररहित के हाथ हो, जो पिपासाकुल मुख के लिए प्याला थामे है।

o

यदि तुम अहंभाव, जाति और देश के बन्धन से एक हाथ भी ऊपर उठ सको तब तुम अपने को देवरूप में पाओगे।

o

यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता, निश्चय ही मैं समुद्र के उतार को दोष न देता। हमारा जलयान उत्तम है और कप्तान योग्य है।

यह तुम्हारा उदर-ही-उदर है, जो ठीक क्रम में नहीं है।

o

पहले से प्राप्त वस्तु की अपेक्षा हमें वह वस्तु प्रियतर होती है, जिसकी हम कामना तो करते हैं, किन्तु प्राप्त नहीं कर पाते !

o

यदि तुम एक बादल पर बैठ पाओ और नीचे देखो तो तुम पाओगे कि दो देशों को विभाजित करने वाली किसी सीमा का अस्तित्व ही नहीं है, न एक खेत से दूसरे खेत को अलग करने का निर्देशक पाषाण ही है।

दयनीय तो यही है कि तुम बादल पर बैठ ही नहीं सकते।

o

सात सदी पूर्व सात धवल कबूतर, एक गहरी घाटी से उड़े, उस हिम-धवल पर्वत की उच्चतम चोटी पर पहुंचने के लिए।

देखने वाले सात पुरुषों में से एक बोला, "मुझे सातवें कबूतर के पंख में एक काला धब्बा नजर आता है।"

आज भी उस घाटी के निवासी उन सात कबूतरों को धवल की जगह काला कहकर उनकी कथा सुनाते हैं।

o

पतझड़ में मैंने अपने समस्त अवसादों को एकत्र करके उद्यान में गहरा गाड़ दिया और अप्रैल में जब मधुमास इस धरती से विलास करने आया, वे गाड़े हुए अवसाद बगीचे के अन्य पुष्पों से भी सुन्दर और लुभावने रूप में खिल पड़े।

और तब मेरे पड़ोसी इन सुमनों को देखने आये और मुझसे कहने लगे, "जब अगली पतझड़ में बीज बोने का समय आयेगा, तो इन सुमनों में से कुछेक के बीज हमें भी दे देना, ताकि हमारे बगीचों में भी इनकी शोभा हो सके।"

o

निश्चय ही यह दयनीय स्थिति है कि मैं किसी के सम्मुख हाथ फैलाऊं और वह खाली रहे!

परन्तु यह उससे भी निराशाजनक स्थिति है कि मैं दान देने के लिए भरा हुआ हाथ आगे बढ़ाऊं और कोई भी उसे ग्रहण करने वाला न हो !

o

मैं अमरत्व की कामना करता हूं, क्योंकि उसीमें मैं अपनी अलिखित कविताओं से और अचित्रित चित्रों से सम्पर्क स्थापित कर सकूंगा।

o

कला प्रकृति से अनन्त की ओर जाने वाली एक सीढ़ो है।

o

अव्यक्त से व्यक्त की रचना, कला का ही एक कार्य है।

o

निश्चेष्ट हाथों की अपेक्षा राजगद्दियों के राजमुकुटों को वनाने वाले हाथ भी अच्छे हैं।

o

हमारे सर्वाधिक पवित्र अश्रु कभी नेत्रों को अपनी राह नहीं बनाते।

o

प्रत्येक मानव कभी भी उत्पन्न प्रत्येक राजा और प्रत्येक दास का आनुक्रमिक वंशज है।

o

यदि ईसा के प्रपितामह को यह ज्ञान होता कि उनमें क्या अन्तर्हित है, तो क्या वह स्वयं अपनी आत्मा से ही भय मानकर स्तब्ध न हो जाते ?

o

क्या जूदा की जननी का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम, माता मेरी के ईसा के प्रति प्रेम की तुलना में कुछ कम था ?

o

हमारे बन्धु ईसा के तीन ऐसे अद्भुत कृत्य थे, जो आजतक उस पवित्र पुस्तक में नहीं लिखे गये :

प्रथम, यह कि वह-तुम जैसा एक मानव था;

द्वितीय यह कि उसमें परिहास की संज्ञा थी,

और, तीसरा यह कि वह विजित होकर भी अपने को विजेता समझता था।

o

हे शहीद ! तुम्हें मेरे हृदय पर बलिदान किया गया है और वे कीलें जो तुम्हारे हाथों और शरीर को छलनी करती हैं, मेरे हृदय को भी पार कर जाती हैं।

और कल जब कोई यात्री इस बलि-वेदी के समीप से गुजरेगा तो उसे ज्ञात भी नहीं होगा कि यहां किन्हीं दो का रक्त बहा था।

वह तो इसे एक ही व्यक्ति का रक्त समझेगा।

o

तुमने सम्भवतः वरदान-प्राप्त पर्वत की बात सुनी होगी। यह विश्व का सर्वोच्च पर्वत है।

यदि तुम उसके सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सको, तब तुम्हारी एक ही इच्छा रह जायगी कि परली घाटी के निम्नतम स्तर में रहने वाले प्राणियों तक पहुंच सको—उनके साथ रहने के लिए।

यही 'वरदान' तो इसे प्राप्त है।

o

उस प्रत्येक विचार को जिसे मैंने अभिव्यक्ति की कारा में बद्ध किया है, अपने कर्तव्यों के द्वारा मुझे स्वतन्त्र कर देना चाहिए।

मंडल द्वारा प्रकाशित
खलील जिब्रान का साहित्य

□□

- विद्रोही आत्माएं
- जीवन-संदेश
- पागल
- बटोही
- तूफान
- शैतान
- आंसू और मुस्कान
- धरती के देवता
- अंतिम संदेश
- हीरे और मोती